

کرتا ہوں جن کو میں نے مہلہ کیلئے بلا دیا اور میں نے ان سب کو اپنے محلہ کی طرف لے گیا کہ
مہلہ کیلئے جانے اور مقام منظرہ کے محلہ میں آویں اور ان کے لئے اور بے نظیر اور
مختص سے ان کے لئے خدا کی نعمت کے لئے ہوں گے۔

اب ہم ان مولائی صاحبوں کے سامنے اپنی سچائی میں کھینچتے ہیں جن میں سے بعض تو اس عاجزانہ کو کافر کہہ
 کہتے ہیں اور مغربی بھی۔ اور بعض کافر کہنے سے تو سکوت اختیار کرتے ہیں۔ مگر مغربی اور کلاب
 اور تھائی نام رکھتے ہیں۔ یہ سب ساری یہ تمام منکر ہیں اور مقلد ہیں یہاں کیلئے بنائے گئے ہیں اور ان کے
 ساتھ وہ سب لوگ بھی جا چکے ہیں جو منکر و مصلاب ہیں اور وہ حقیقت ہر ایک شخص جو خدا اور رسولی کلمہ
 سے بے اراستی عاجزانہ کی طرف رجوع کرنے سے گریز نہ کر سکا ہے اور مقلدانہ میں داخل ہے۔ کیونکہ اگر
 مقلد ہے تو اسے تو ایسے شخص کے عقیدہ کے وقت جس کی نسبت آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے تاکید
 فرمائی تھی کہ اس کی مدد کرو اور اس کو یہ اسلام پہنچا دو اور اس کے نقصان میں داخل ہو جاؤ تو ضرور اس
 کی بداعت میں داخل ہو جاؤ۔ اور صاف دامن خیر و اچھے یہ مقلد ہے کہ خدا تعالیٰ سے ڈر کر اور
 ہر ایک کلمہ امت سے الگ ہو کر اور کمال تفرقہ اور جدال سے اس پاک جناب میں توجہ کر کے اس
 راہ راستہ کا اسی کے کشف اور الہام سے انکشاف ہاں ہیں۔ اور جب خدا کے فضل سے انہیں معلوم
 کرا جائے تو پھر جیسا کہ ان کی افشاہی عثمان کے کانچے ہے محبت اور اتحاد اس اور کمال رحمت سے
 ثواب آخرت حاصل کریں اور سچائی کی کو اسی کیلئے کڑے ہو جائیں۔ مولویان لشکرِ بدعت سے
 خبردار ہیں کہ ان کے اندر کوئی مولوی روشنی نہیں۔ لیکن جو لوگ حضرت احمدؑ سے بے شک
 مقام نہ رکھتے ہیں اور تو کہیں شخص سے امتیاز کی ہر کیسی سے الگ ہو گئے ہیں۔ اور خدا کے فضل
 سے قریب ہیں۔ اگرچہ بہت خوش ہے۔ ہیں بھائیے ہیں مگر یہ امت پر خود میں سے نہائی نہیں۔
 وہ لوگ جو یہاں کیلئے مخاطب کئے گئے ہیں یہ ہیں۔

دورانِ جوہل کیلئے غلطی کے گئے ہیں یہ ہیں۔

موسوی اندر مسیحیت و باطنی	شیخ محمد حسین موسوی اندر باطنی و اهل بیت	موسوی اندر حدیث و باطنی و اهل بیت و مسیحیت و باطنی
---------------------------	--	--

مولوی رفیع الدین نقوی مولوی محمد اتیق و مولوی سجاد علی

موتوئی محمد احمد علی	موتوئی محمد احمد علی	موتوئی محمد احمد علی
----------------------	----------------------	----------------------

مولوی محمد علی صاحب دینی قراقرم	مولوی مستعان قند صاحب ساکن علاقہ جہلم
---------------------------------	---------------------------------------

مجله علمی پژوهشی فصلنامه علمی پژوهشی مطالعات راهبردی، تابستان ۱۳۹۸، شماره ۱۵، ۱۰۵-۱۲۵
مجله علمی پژوهشی فصلنامه علمی پژوهشی مطالعات راهبردی، تابستان ۱۳۹۸، شماره ۱۵، ۱۰۵-۱۲۵

Figure 1. The structure of the proposed model.

اور سجاد و نشینوں کے نام یہ ہیں

الحام الحام الحام الحام الحام

مؤلف: محمد صالح المنجد	موضوع: فقه
------------------------	------------

[illegible]

2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	2023-24	2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29	2029-30	2030-31	2031-32	2032-33	2033-34	2034-35	2035-36	2036-37	2037-38	2038-39	2039-40	2040-41	2041-42	2042-43	2043-44	2044-45	2045-46	2046-47	2047-48	2048-49	2049-50	2050-51	2051-52	2052-53	2053-54	2054-55	2055-56	2056-57	2057-58	2058-59	2059-60	2060-61	2061-62	2062-63	2063-64	2064-65	2065-66	2066-67	2067-68	2068-69	2069-70	2070-71	2071-72	2072-73	2073-74	2074-75	2075-76	2076-77	2077-78	2078-79	2079-80	2080-81	2081-82	2082-83	2083-84	2084-85	2085-86	2086-87	2087-88	2088-89	2089-90	2090-91	2091-92	2092-93	2093-94	2094-95	2095-96	2096-97	2097-98	2098-99	2099-00	2100-01	2101-02	2102-03	2103-04	2104-05	2105-06	2106-07	2107-08	2108-09	2109-10	2110-11	2111-12	2112-13	2113-14	2114-15	2115-16	2116-17	2117-18	2118-19	2119-20	2120-21	2121-22	2122-23	2123-24	2124-25	2125-26	2126-27	2127-28	2128-29	2129-30	2130-31	2131-32	2132-33	2133-34	2134-35	2135-36	2136-37	2137-38	2138-39	2139-40	2140-41	2141-42	2142-43	2143-44	2144-45	2145-46	2146-47	2147-48	2148-49	2149-50	2150-51	2151-52	2152-53	2153-54	2154-55	2155-56	2156-57	2157-58	2158-59	2159-60	2160-61	2161-62	2162-63	2163-64	2164-65	2165-66	2166-67	2167-68	2168-69	2169-70	2170-71	2171-72	2172-73	2173-74	2174-75	2175-76	2176-77	2177-78	2178-79	2179-80	2180-81	2181-82	2182-83	2183-84	2184-85	2185-86	2186-87	2187-88	2188-89	2189-90	2190-91	2191-92	2192-93	2193-94	2194-95	2195-96	2196-97	2197-98	2198-99	2199-00	2200-01	2201-02	2202-03	2203-04	2204-05	2205-06	2206-07	2207-08	2208-09	2209-10	2210-11	2211-12	2212-13	2213-14	2214-15	2215-16	2216-17	2217-18	2218-19	2219-20	2220-21	2221-22	2222-23	2223-24	2224-25	2225-26	2226-27	2227-28	2228-29	2229-30	2230-31	2231-32	2232-33	2233-34	2234-35	2235-36	2236-37	2237-38	2238-39	2239-40	2240-41	2241-42	2242-43	2243-44	2244-45	2245-46	2246-47	2247-48	2248-49	2249-50	2250-51	2251-52	2252-53	2253-54	2254-55	2255-56	2256-57	2257-58	2258-59	2259-60	2260-61	2261-62	2262-63	2263-64	2264-65	2265-66	2266-67	2267-68	2268-69	2269-70	2270-71	2271-72	2272-73	2273-74	2274-75	2275-76	2276-77	2277-78	2278-79	2279-80	2280-81	2281-82	2282-83	2283-84	2284-85	2285-86	2286-87	2287-88	2288-89	2289-90	2290-91	2291-92	2292-93	2293-94	2294-95	2295-96	2296-97	2297-98	2298-99	2299-00	2300-01	2301-02	2302-03	2303-04	2304-05	2305-06	2306-07	2307-08	2308-09	2309-10	2310-11	2311-12	2312-13	2313-14	2314-15	2315-16	2316-17	2317-18	2318-19	2319-20	2320-21	2321-22	2322-23	2323-24	2324-25	2325-26	2326-27	2327-28	2328-29	2329-30	2330-31	233
---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	-----

مستأجره ثمانية اشهر
ثمنه خمسة اشهر

لوہی سرس، کوئی شے، مہا اقدار، سرس، تلمی، کوئی شے، مہا اقدار، سرس، تلمی

اسماء بنت ابی بکر	اسماء بنت ابی بکر
-------------------	-------------------

1. *الشيخ محمد بن عبد الوهاب*

[illegible][illegible]

مولوی محمد آصف صاحب، پاشین قاضی، حیدرآباد، علی صاحب، مراد آباد

مؤلف: مولانا ابوالحسن علی Nadwi
موضوع: تاریخ اسلام

پیشہ ورانہ تعلیم کے شعبے میں پاکستان کی موجودہ صورتحال اور مستقبل کا جائزہ

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

Figure 1 consists of six black and white photographs arranged in a 2x3 grid. The top row shows three photographs of a patient's face from 1974, 1975, and 1976. The bottom row shows two photographs from 1977 and 1978. The photographs illustrate the progression of a patient's facial appearance over a four-year period, showing a gradual improvement in facial features.

طاہر اہل سنت سے ملاقات	میرزا ابوالکلام محمد صاحب دہلوی	مولانا ابوالکلام آزاد صاحب
------------------------	---------------------------------	----------------------------

پاکستان میں اسلام آباد کی ساری ساری سڑکیں

(۷۱)

مولوی مستعان شاہ صاحب سائبر علاقہ جے پور

مولوی محمد عمر صاحب دہلی فراشتانہ

مولوی فضل کریم صاحب نیازی غازی پور زمینا

مولوی حفیظ الدین صاحب دو جانہ ضلع رچنگ

مولوی حاجی عابد حسین صاحب دیوبند

اور سجادہ نشینوں کے نام یہ ہیں

غلام نظام الدین صاحب سجادہ نشین نیاز احمد صاحب بریلی

میاں اللہ بخش صاحب سجادہ نشین سلیمان صاحب تونسوی سنگھری

میاں غلام فرید صاحب چشتی چاچڑاں علاقہ بہاولپور

مستان شاہ صاحب کابلی

محمد حسین صاحب گدی نشین شیخ عبدالقدوس صاحب گنگوہی

تلمہورا حسین صاحب گدی نشین ہمالہ ضلع گورداسپور

سید صوفی جان صاحب مراد آبادی صابری چشتی

مولوی قاضی سلطان محمود صاحب آیہ انوار والدہ پنجاب

توکل شاہ صاحب امبالہ

مولوی عبدالغنی صاحب چائین قاضی اسماعیل صاحب مرحوم بنگلور

مولوی ولی النبی شاہ صاحب نقشبند راہپور دارالریاست

میر امداد علی شاہ صاحب سجادہ نشین شاہ ابو الحل نقشبند

عبداللطیف شاہ صاحب خلف حاجی نجم الدین شاہ صاحب چشتی جوہپور

علاقہ اودے پور میداڑ

چائین عبدالرزاق صاحب نکستہ فرنگی محل

علی حسین صاحب کچھو چھا ضلع فقیر آباد

میرزا بادل شاہ صاحب بدایونی

مولوی عبدالوہاب صاحب

قطب علی شاہ صاحب دیوگڑھ

سید حسین شاہ صاحب مودودی دہلی

حاجی وارث علی شاہ صاحب مقام پوہ ضلع نکستہ

مولوی عبدالوہاب صاحب

میرزا بادل شاہ صاحب بدایونی

قطب علی شاہ صاحب دیوگڑھ

سید حسین شاہ صاحب مودودی دہلی

مولوی عبدالوہاب صاحب

میرزا بادل شاہ صاحب بدایونی

قطب علی شاہ صاحب دیوگڑھ

سید حسین شاہ صاحب مودودی دہلی



کیا خواجہ غلام فرید مرزا قادیانی کو نبی سمجھتے تھے۔؟

آج کل کچھ مربی سادہ لوح مسلمانوں کو یہ جھانسدیتے نظر آتے ہیں کہ خواجہ غلام فریدؒ مرزا قادیانی کو نبی مانتے تھے۔ جبکہ حقیقت یہ کہ خواجہ غلام فریدؒ حضور نبی کریم ﷺ تاجدار ختم نبوت ﷺ کو آخری نبی مانتے تھا اور آپ ﷺ کے بعد کسی بھی قسم کی نبوت کے قائل نہ تھے۔

[illegible]

فوائد فریدہ
کام اور برکت کی بی غمت آری
وفاقی معینی شاہزاد
محمد کتب خانہ
پاکستان

